IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

“वैश्विक वस्त्र व्यापार - लघु उद्यमियों के लिए एक महत्वपूर्ण सरोकार - संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ”

डॉ. रेखा बेरवाल

सह आचार्य, गृह विज्ञान (वस्त्र एवं आवरण)

चौधरी बल्लू राम गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय,

श्री गंगानगर

परिचय:

कपड़ा और वस्त्र उद्योग के विषय में:

▪ कपड़ा और वस्त्र उद्योग श्रम प्रधान क्षेत्र है जो भारत में 45 मिलियन लोगों को रोज़गार देता है, रोज़गार के मामले में इस क्षेत्र का कृषि क्षेत्र के बाद दूसरा स्थान है।

▪ भारत का कपड़ा क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था के सबसे पुराने उद्योगों में से एक है और पारंपरिक कौशल, विरासत तथा संस्कृति का भंडार एवं वाहक है।

➢ **इसे दो भागों में बाँटा जा सकता है-**

▪ असंगठित क्षेत्र छोटे पैमाने का है जो पारंपरिक उपकरणों और विधियों का उपयोग करता है। इसमें हथकरघा हस्तशिल्प एवं रेशम उत्पादन शामिल हैं।

▪ संगठित क्षेत्र आधुनिक मशीनरी और तकनीकों का उपयोग करता है तथा इसमें कताई, परिधान एवं वस्त्र शामिल हैं।

वस्त्र उद्योग का महत्त्व:

▪ यह भारतीय सकल घरेलू उत्पाद में 2.3%, औद्योगिक उत्पादन का 7%, भारत की निर्यात आय में 12% और कुल रोज़गार में 21% से अधिक का योगदान देता है।

▪ भारत 6% वैश्विक हिस्सेदारी के साथ तकनीकी वस्त्रों का छठा (विश्व में कपास और जूट का सबसे बड़ा उत्पादक) बड़ा उत्पादक देश है। तकनीकी वस्त्र कार्यात्मक कपड़े होते हैं जो ऑटोमोबाइल, सिविल इंजीनियरिंग और निर्माण, कृषि, स्वास्थ्य देखभाल, औद्योगिक सुरक्षा, व्यक्तिगत सुरक्षा आदि सहित विभिन्न उद्योगों में अनुप्रयोग होते हैं।

▪ भारत विश्व में रेशम का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश भी है जिसकी विश्व में हाथ से बुने हुए कपड़े के मामले में 95% हिस्सेदारी है।

- टैक्सटाइल व्यापार के क्षेत्र में 172 बिलियन डॉलर में 2022 में घरेलू उपभोग ने 110 बिलियन डॉलर का रहा गारमेंट की जो हिस्सेदारी है वह 80 बिलियन डॉलर है। होम फ़र्निशिंग एवं टेक्निकल टेक्सटाइल्स की हिस्सेदारी 8 मिलियन डॉलर की रही हैं।
- देश में टेक्सटाइल उत्पादन का 25% निर्यात किया जाता है। समग्र निर्यात चौवालिस प्वाइंट चार बिलियन डॉलर का है। अगर एक्सपोर्ट की बारीकियों में जाए तो 2021-22 में सबसे अधिक निर्यात 44.4 बिलियन डॉलर का रहा इस एक्सपोर्ट में रेडिमेड गारमेंट की हिस्सेदारी 16 बिलियन डॉलर की रही।
- सूती कपड़े यानी की कॉटन टेक्सटाइल की हिस्सेदारी 11 बिलियन डॉलर से भी ज़्यादा की आंकी गई इसी प्रकार मैन मेड या सिंथेटिक जो फैब्रिक हैं। उसका जो एक्सपोर्ट में हिस्सेदारी 5.5 बिलियन डॉलर की रही हैंडीक्राफ्ट टेक्सटाइल उत्पादन की हिस्सेदारी 4 बिलियन डॉलर के क़रीब रही व एक्सपोर्ट किए गई है।
- मेक इन इंडिया मोमेंट के तहत देश में उत्पादन क़रीब 25 प्रतिशत बढ़ा। यार्न यानी धागे का उत्पादन 2014-15 में 77.67 लाख टन से बढ़कर 2022-23 में 97.46 लाख टन पहुँच गया जबकि कपड़े का उत्पादन 2014-15 में 374.54 लाख टन से बढ़कर 2022 -23 में 470 लाख टन हो गया है।
- इसके अलावा गारमेंट उत्पादन 1753 करोड़ पी एस से बढ़कर 2022-23 में 2200 करोड़ पीस पहुँच गया है। भारत पर्याप्त अच्छे माल वह एक बड़े कारोबार के साथ एक वैश्विक रेडीमेड गारमेंट में अपना आधिपत्य ज़माने के लिए तैयार है। भारतीय रेडीमेड कपड़ों का निर्यात 2027 तक 30 बिलियन अमेरिकी डॉलर के स्तर को पार करने की उम्मीदे हैं सरकार का लक्ष्य है कि टेक्सटाइल निर्यात कों 2030 तक 100 बिलियन डॉलर तक पहुँचा सकें।
- गारमेंट के क्षेत्र को विभिन्न टेक्सटाइल क्लस्टर में बाँटा गया है जिससे की मैन्यूफैक्चरर एक जगह अपना व्यापार संबंधी बातों को तय कर सकते हैं इन्हीं टेक्सटाइल क्लस्टर में जैसे के लुधियाना ,कलकत्ता, बम्बई, जयपुर इत्यादि आते हैं सरकार का लक्ष्य है कि भारत को 2047 तक विकसित देशों की सूची में शामिल कर सके और यह लक्ष्य टेक्सटाइल सेक्टर को आगे बढ़ाएं बिना पूरा नहीं हो सकता है।
- नेशनल टेक्निकल टेक्सटाइल मिशन से आने वाले समय में टेक्निकल टेक्सटाइल्स से देश की उन्नति में बहुत बड़ा योगदान मिलेगा भारत के कूल कपड़ों उत्पादन में टेक्निकल टेक्सटाइल्स की हिस्सेदारी 19 फ़ीसदी है तकनीकी वस्त्र यानी की टेक्निकल टेक्सटाइल्स एक को स्पेशल फंक्शनल वाले इंजीनियर उत्पाद हैं। इन्हें प्राकृतिक रेशों के साथ साथ मैन मेड रेशों से स्पेनडैक्स केबलर, नोबेकस,इत्यादि को मिक्स करके बनाया जाता है इनकी फंक्शनल प्रॉपर्टीज़ जैसे उच्च दृढ़ता ,बेहतर थर्मल रजिस्ट्रेशन ,बेहतर इन्सुलेशन होते हैं।
- टेक्निकल टेक्सटाइल्स को एग्रीकल्चर टेक्सटाइल सेक्टर ,कंस्ट्रक्शन, होम,स्पोर्ट्स जैसी 12 सेक्टर में बाँटा गया है। टेक्निकल टेक्सटाइल्स में मज़बूती पर सरकार पूर्णतया फ़ोकस है। ये टेक्सटाइल्स आने वाले समय में भारत की अर्थव्यवस्था को बूस्ट करने में मददगार हैं फ़िलहाल ज़्यादातर टेक्निकल टैक्सटाइल के लिए भारत विदेशियों पर निर्भर है लेकिन अब देश में टेक्निकल टेक्सटाइल्स का उत्पादन व्यापक स्तर पर हो रहा है और इसका कमर्शियलाईजेशन भी बड़े स्तर पर हो रहा है। इससे अर्थव्यवस्था को और भी मज़बूत बनाया जा रहा है जिससे रोज़गार वह उद्योग धंधों में अनेक अवसर युवाओं को मिल रहे हैं। इस दिशा में भारत निरंतर प्रयासरत हैं समर्थ स्कीम सरकार द्वारा चलायी जा रही है।
- समर्थ स्कीम में लाखों नौजवान युवक युवतियों को ट्रेनिंग दी गई है इस स्कीम के तहत टेक्निकल टेक्सटाइल्स के क्षेत्र में भी ट्रेनिंग दी जा रही है अब तक इस क्षेत्र में 11 लाख लोगों को ट्रेनिंग दी गई वह ख़ुशी की बात यह है कि लगभग 74 प्रतिशत को नौकरी भी प्राप्त हो चुकी है।
- 2023 में 6.6 % CAGR के साथ 610.91 बिलियन डॉलर का सकल घरेलू उत्पाद में 2.3% का योगदान बढ़ा है अगर हम टेक्निकल टेक्सटाइल्स के क्षेत्र की बात करें तो इसमें 73 प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी रही व 63% SC ST कैटेगरी के लोगों को रोज़गार दिया गया भारत के पास स्किल्ड लेबर भरपूर है। जिससे की लागत मैन्यूफैक्चर यानी की उत्पादन की है जो लागत है वह घट जाती है और इसके फलस्वरूप जो मार्केट में कॉम्पिटिशन का एडवांटेज है। वह हमें मिल जाता है। सरकार का लक्ष्य टेक्सटाइल सेक्टर को समृद्ध बनाना है। इसके लिए वह फ़ाइबर , फेब्रिक ,फॉरन ट्रेड इत्यादि सभी पर अपना ध्यान केंद्रित कर रही है इसी के तहत 5एफ फ़ॉर्मूला भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने दिया था। यह एकीकृत बुनियादी ढांचे की आधुनिक अवधारणा को पेश करता है। जो कपड़ा और वस्त्र निर्माण के क्षेत्र को बढ़ावा देती है और उत्पादन क्षेत्र को दोगुना करने पर निर्यातकों 3 गुना करने में भी सहायक सिद्ध होगी।

- 2030 तक 100 अरब डॉलर के लक्ष्य को हासिल करने के लिए सरकार ने कई बड़े नीतिगत फ़ैसले लिए हैं। टेक्सटाइल सेक्टर को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने गुणवत्तापूर्ण उत्पादन निर्यात बढ़ाने के लिए कई नीतिगत फ़ैसले व योजनाएं लागू की गई हैं। ।आत्मनिर्भर भारत के विजन को मज़बूती देने के लिए टेक्सटाइल क्षेत्र पर निरंतर सरकार का ध्यान जारी है। सरकार का मुख्य उद्देश्य भारतीय कपड़ों एवं टेक्सटाइल उद्योग के लिए एक बेहतरीन इको सिस्टम तैयार करना है। ताकि लॉजिस्टिक स्कोर को काफ़ी कम किया जा सके। इसके तहत PM मित्र पार्क एक गेम चेंजर की तरह साबित हुए हैं। इस से उत्पादन की लागत में भारी कमी आएगी व इन पार्कों को PPP मोड़ पर विकसित किया जा रहा है इस मेगा परियोजना से टेक्सटाइल्स के क्षेत्र में बड़ा बूम आने की संभावना है ।ज़ाहिर तौर पर यह योजना मेक इन इंडिया या आत्मनिर्भर भारत को बनाने में क़ामयाब रहेगी और इस अभियान को बहुत अधिक बल मिलेगा और मेक इन इंडिया या आत्मनिर्भर भारत के इस अभियान को कामयाबी की बुलंदियों पर ले जाने में सहायक सिद्ध होगा और यह मेक फॉर वर्ल्ड का एक बेहतरीन उदाहरण होगा। सरकार ने प्रोत्साहन देने के लिए कपड़ा एवं वस्त्र उद्योग में सौ प्रतिशत F DI की अनुमति दी है करोना महामारी के दौरान भी अप्रैल 2020 से मई 2023 के बीच चार प्वाइंट सोला बिलियन डॉलर का एफ़डीआई फ़्लो हुआ।
- **भारतीय वस्त्र उद्योग की चुनौतियाँ :**
- **अत्यधिक खंडित:**

भारतीय वस्त्र उद्योग अत्यधिक खंडित है और इसमें मुख्य तौर पर असंगठित क्षेत्र तथा छोटे एवं मध्यम उद्योगों का प्रभुत्व देखने को मिलता है।

- **पुरानी तकनीक:**

भारतीय वस्त्र उद्योग के समक्ष नवीनतम तकनीक तक पहुँच एक बड़ी चुनौती है (विशेषकर लघु उद्योगों में) और ऐसी स्थिति में यह अत्यधिक प्रतिस्पर्द्धी बाज़ार में वैश्विक मानकों को पूरा करने में विफल रहा है।

- **कर संरचना संबंधी मुद्दे:**

कर संरचना जैसे- वस्तु एवं सेवा कर (GST) घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों में वस्त्र उद्योग को महँगा एवं अप्रतिस्पर्द्धी बनाती है।

- **स्थिर निर्यात:**

इस क्षेत्र का निर्यात स्थिर है और पिछले छह वर्षों से 40 अरब डॉलर के स्तर पर बना हुआ है।

- **व्यापकता का अभाव:**

भारत में परिधान इकाइयों का औसत आकार 100 मशीनों का है जो बांग्लादेश की तुलना में बहुत कम है, जहाँ प्रति कारखाना औसतन कम-से-कम 500 मशीनें हैं।

- **विदेशी निवेश की कमी:**

ऊपर दी गई चुनौतियों के कारण विदेशी निवेशक वस्त्र उद्योग में निवेश करने के बारे में बहुत उत्साहित नहीं हैं जो कि एक महत्त्वपूर्ण चिंता का विषय है।

- यद्यपि इस क्षेत्र में पिछले पाँच वर्षों के दौरान निवेश में तेज़ी देखी गई है, किंतु उद्योग ने अप्रैल 2000 से दिसंबर 2019 तक केवल 3.41 बिलियन अमेरिकी डॉलर का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) आकर्षित किया है।
- **प्रमुख पहल:**
- **संशोधित प्रौद्योगिकी उन्नयन कोष योजना** : वर्ष 2015 में सरकार ने कपड़ा उद्योग के प्रौद्योगिकी उन्नयन हेतु "संशोधित प्रौद्योगिकी उन्नयन कोष योजना (ATUFS) को मंज़ूरी दी।
- एकीकृत **वस्त्र पार्क योजना:** यह योजना कपड़ा इकाइयों की स्थापना के लिये विश्व स्तरीय बुनियादी सुविधाओं के निर्माण हेतु सहायता प्रदान करती है।।
- **समर्थ (कपड़ा क्षेत्र में क्षमता निर्माण हेतु योजना):** कुशल श्रमिकों की कमी को दूर करने के लिये वस्त्र क्षेत्र में क्षमता निर्माण हेतु समर्थ योजना की शुरुआत की गई।
- **पूर्वोत्तर क्षेत्र वस्त्र संवर्द्धन योजना (North East Region Textile Promotion Scheme-NERTPS):** यह कपड़ा उद्योग के सभी क्षेत्रों को बुनियादी ढांँचा, क्षमता निर्माण और विपणन सहायता प्रदान करके NER में कपड़ा उद्योग को बढ़ावा देने से संबंधित योजना है।
- **पावर-टेक्स इंडिया:** इसमें पावरलूम टेक्सटाइल में नए अनुसंधान और विकास, नए बाज़ार, ब्रांडिंग, सब्सिडी और श्रमिकों हेतु कल्याणकारी योजनाएंँ शामिल हैं।

- **रेशम समग्र योजना:** यह योजना घरेलू रेशम की गुणवत्ता और उत्पादकता में सुधार लाने पर ध्यान केंद्रित करती है ताकि आयातित रेशम पर देश की निर्भरता कम हो सके।
- **जूट आईकेयर:** वर्ष 2015 में शुरू की गई इस पायलट परियोजना का उद्देश्य जूट की खेती करने वालों को रियायती दरों पर प्रमाणित बीज प्रदान करना और पानी सीमित परिस्थितियों में कई नई विकसित रेटिंग प्रौद्योगिकियों को लोकप्रिय बनाने के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों को दूर करना है।▪ राष्ट्रीय तकनीकी वस्त्र मिशन: इसका उद्देश्य देश को तकनीकी वस्त्रों में वैश्विक नेता के रूप में स्थान देना और घरेलू बाज़ार में तकनीकी वस्त्रों के उपयोग को बढ़ाना है। इसका लक्ष्य वर्ष 2024 तक घरेलू बाज़ार का आकार 40 बिलियन अमेरिकी डॉलर से 50 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक ले जाना है।

- **आगे की राह व संभावनाएँ :**

एक्सपोर्ट को बढ़ाने के लिए ऑस्ट्रेलिया ,युए ई देशों के साथ फ्री ट्रेड भी शुरू किया गया और ब्रिटेन जैसे देशों के साथ भी फ्री ट्रेड हेतु जल्द ही सहमति बन सकती है देश में गारमेंट वे टेक्सटाइल उद्योग के क्षेत्र में 2023 में आयी नई व्यापार नीति का स्वागत किया ।नई व्यापार नीति से व्यापार में बढ़ावा मिलने के साथ ही MSME को भी बढ़ावा मिलेगा नई नीति में MSME के लिए लाइसेंस फ़ीस में कमी की गई और 5 स्टार एक्सपोर्ट हाउस के लिए एक्सपोर्ट टर्नओवर कि सीमा भी कम कर दी गई है साथ ही टेक्नोलॉजी अपग्रेडेशन के लिए सरकार काफ़ी पैसे ख़र्च कर रही है। इस सेक्टर को और भी लुभावना बनाया जा रहा है दो करोड़ का लोन 8.15% तक दिया जा रहा है। इसके अलावा मशीनरी इत्यादि के इंपोर्ट पर भी रीबेट मिलता है मिलता है सरकार ने इस सेक्टर को बूस्ट करने के लिए प्रोडक्शन लिंकड इन्सेंटिव योजना भी लॉन्च की है जिससे कि इस सेक्टर को बड़ा फ़ायदा होगा यह योजना 10,683 करोड़ की है। इस क्षेत्र में क़रीब ढाई लाख लोगों को रोज़गार मिलने की संभावना है 2015 में कपड़ा उद्योग के अमेंडमेंट टेक्नोलॉजी अपग्रेडेशन फंड स्कीमों को भी लागू किया गया विश्व स्तरीय सुविधाओं को लागू करने के लिए इंटीग्रेटेड टेक्सटाइल पार्क स्कीम लागू की गई कुशल श्रमिकों की कमी को दूर करने के लिए वस्त्र उद्योग क्षेत्र में स्किल डेवलपमेंट के लिए समर्थ योजना की भी शुरुआत की गई ।नॉर्थ ईस्ट रीज़न में टेक्सटाइल प्रमोशन स्कीम लाई गई जो कि बुनियादी ढांचा प्रदान करने के लिए वरदान साबित होगी ।पावर टैक्स स्कीम के तहत नए अनुसंधान नई कल्याणकारी योजनाओं को लागू किया गया। सिल्क टैक्सटाइल के क्षेत्र में बढ़ावा देने के लिए समग्र स्कीम भी लाई गई वही जूट आयी केयर 2017 में लाई गई जूट उत्पादन के लिए रियायती दरों पर बीज उपलब्ध करवाने हेतु इस पायलट योजना को लागू किया गया। सरकार गारमेंट की क्वालिटी वह एक्सपोर्ट पर अपना ध्यान फ़ोकस कर रही है ।सरकार क्वालिटी कन्ट्रोल की भी तैयारी कर रही है । जिससे तय समय पर ऑर्डर मिले व क्वालिटी युक्त ऑर्डर प्राप्त किए जा सकेंगे और एक्सपोर्ट किए जा सकेंगे इसमें स्पेशलाइजड ऑर्डर जैसे कि एग्रीकल्चर टेक्सटाइल ,मेडिकल टैक्सटाइल को भी शामिल किया गया है ।ताकि उच्च गुणवत्ता युक्त माल भारतीय बाज़ार में उपलब्ध करवाया जा सके। टेक्सटाइल के क्षेत्र में भारत प्राचीन समय से ही प्रसिद्ध रहा है कुछ वर्षों में खादी की ख़ासी लोकप्रियता रही है । खाद्य उत्पादन में रोज़गार की भी अपार संभावनाएं हैं और यह क्षेत्र लगातार उन्नति कर रहा है , 2022 में होम टेक्सटाइल वह फ़र्निशिंग उद्योग का बाज़ार 19 बिलियन से अधिक रहा व आठ बिलियन का एक्सपोर्ट किया गया।

भारत अपने परम्परागत टेक्सटाइल्स के लिए सदियों से ही प्रसिद्ध रहा है ।भारतीय फ़ैशन दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं ।आज दुनिया भर की नई और इनोवेटिव डिज़ाइन का ख़ास ख्याल रखकर ही भारतीय टेक्सटाइल उद्योग निरंतर प्रगति कर रहा है । हमारी पारम्परिक वस्त्रों की दीवानगी सारी दुनिया में फैली हुई है ।चाहे दुनिया की माँग को पूरा करना हो या घरेलू उत्पाद की माँग की पूर्ति करनी हो भारतीय टैक्सटाइल सक्षम तौर पर अपनी भूमिका निभा रहा है ।टेक्सटाइल डिज़ाइन पर विशेष फ़ोकस रहा है ।मॉडर्न डिज़ाइन हमारे डिज़ाइनर्स के द्वारा तैयार किए जा रही है लघु एवं मध्यम उद्योग भी निरंतर हैंडीक्राफ्ट में टेक्सटाइल में प्रगति कर रहे हैं ।देश में लगातार मेलों का आयोजन किया जाता है ।जिससे ईको सिस्टम को और मज़बूत करने में मदद मिली है ।एक ही मंच पर उत्पादक व बाज़ार संबंधी जानकारी उपलब्ध हो सके इसी लिए ऐसे आयोजन किए जाते हैं, टेक्सटाइल क्षेत्र को रणनीतिक तौर पर प्रोत्साहन दिया जा रहा है ।

▪ वस्त्र क्षेत्र में काफी संभावनाएँ हैं और इसे नवाचारों, नवीनतम प्रौद्योगिकी और सुविधाओं का उपयोग करके महसूस किया जाना चाहिये।

▪ भारत वस्त्र उद्योग के लिये मेगा अपैरल पार्क और साझा बुनियादी ढाँचे की स्थापना करके इस क्षेत्र को संगठित कर सकता है। अप्रचलित मशीनरी और प्रौद्योगिकी के आधुनिकीकरण पर ध्यान दिया जाना चाहिये।

▪ भारत को वस्त्र क्षेत्र के विकास हेतु एक व्यापक खाका तैयार करने की ज़रूरत है। इसके एक बार तैयार हो जाने के बाद देश को इसे हासिल करने के लिये मिशन मोड में कार्य करने की ज़रूरत होगी।कुशल ,अकुशल कारीगर ,कंप्यूटर, स्टार्टअप जैसे सभी क्षेत्रों में निरंतर ध्यान दिया जा रहा है। ई - कॉमर्स व आधुनिकीकरण के युग में भारतीय टेक्सटाइल्स वैश्विक स्तर पर अपनी एक अलग पहचान बना चुका है ।देश में बनी मशीनों व उपकरणों के साथ दुनिया में अव्वल उत्पादक बनने के लिए तैयार है।

➢ **रूमा देवी जिसने बदल दी 22,000 महिलाओं की ज़िंदगी................. वो 8वीं पास महिला जिसने अपने हुनर के दम पर तय किया Harvard University तक का सफ़र**

"बड़ा संघर्ष बड़ी सफलता का इतिहास रचता है"

अगर आपको जीवन में कुछ पाना है, तो संघर्ष ज़रूरी है. ऐसी ही कहानी राजस्थान की रूमा देवी की ही, जिनका एक लंबा सफ़र संघर्ष में बिता, 8वीं तक ही पढ़ाई की, लेकिन हुनर और कड़ी मेहतन के दम उन्होंने एक बड़ा मुकाम हासिल किया. आज वो एक सफल महिला हैं, जिन्होंने हज़ारों महिलाओं को सशक्त बनाया है।

आज रूमा देवी एक सफल महिला हैं, लेकिन उनका जीवन उतना आसान नहीं था. रूमा देवी का जन्म राजस्थान के बाड़मेर में एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था. उनका जीवन बचपन से ही संघर्ष से भरा रहा. बचपन में ही उनके ऊपर से मां का साया छीन गया. उनके पिता ने दूसरी शादी कर ली और उन्हें चाचा के पास छोड़ दिया. आठ भाई-बहनों में बड़ी रूमा देवी पर मानों पहाड़ टूट पड़ा हो।

इन सब कारणों की वजह से रूमा देवी सब 8वीं तक पढ़ पाईं. कम उम्र में ही उन्होंने घर का सारा काम सीखा. वहीं, कम उम्र में ही उनकी शादी हो गई थी. ससुराल में भी मुसीबत कम नहीं हुई. आर्थिक तंगी वहां भी लगी रही. इस दौरान उनका बच्चा बीमार पड़ गया और पैसों की तंगी की वजह से उसका इलाज न हो सका और उसकी मौत हो गई. रूमा देवी ने ठान लिया कि अब वो अपने पैरों पर खड़ी होंगी।

मात्र 8वीं तक पढ़ाई की थी, लेकिन उनके पास हुनर था. वो कढ़ाई-बुनाई का काम कर लिया करती थीं. फिर क्या था वो Gramin Vikas Evam Chetna Sansthan नाम के एनजीओ से जुड़ी गईं और बहुत ही जल्द कढ़ाई में उस्ताद रूमा देवी सभी की चहेती बनी गईं. 2010 में रूमा देवी को उस एनजीओ का अध्यक्ष बना दिया गया।

आज रूमा देवी आज एक सफल फ़ैशन डिज़ाइनर हैं, जिनकी डिज़ाइन किए कपड़े न सिर्फ़ देश बल्कि विदेश तक जाते हैं. रूमा देवी के डिज़ाइन किए कपड़ों को लंदन, सिंगापुर, कोलंबो व जर्मनी में भी दिखाया जा चुका है।

अन्य महिलाओं को किया सशक्त

साल 2015 में रूमा देवी को 'राजस्थान हेरिटेज वीक' में जाने का अवसर मिला, जहां उनके डिज़ाइन किए हुए कपड़े पहनकर इंटरनेशनल फ़ैशन डिज़ाइनर अब्राहम एंड ठाकुर और भारत के फ़ेमस डिज़ाइनर हेमंत त्रिवेदी के मॉडल्स ने रैम्प वॉक किया. वहीं, उनके साथ ख़ुद रूमा देवी और उनसे जुड़ी महिलाएं रैंप पर उतरीं. आज रूमा देवी से क़रीब 22 हज़ार महिला कारिगर जुड़ी हैं यानी उन्होंने ख़ुद को सशक्त बनाया और अन्य महिलाओं को भी अपने पैरों को खड़ा होने का मौक़ा दिया।

पहुंची हावर्ड यूनिवर्सिटी

रूमा देवी की मेहनत और उनके हुनर को देखते हुए हार्वर्ड विश्वविद्यालय ने उन्हें लेक्चर के लिए आमंत्रित किया था. ये न सिर्फ़ रूमा देवी के लिए बल्कि देश के लिए गर्व की बात है।

साल 2018 में रूमा देवी को पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के हाथों नारी शक्ति अवार्ड से भी सम्मानित किया गया था. वहीं, रूमा देवी केबीसी में भी आ चुकी हैं।

संदर्भ:

- योगानंदन, जी., और वेट्रिसेल्वन, वी. (2016)। भारत में कपड़ा उद्योग का विकास। जर्नल फॉर रिसर्च एनालिसिस, 5 (10), 25-26।
- योगानन्दन, जी।,&सरवनन,आर।(2015)।प्रभावकाthe वैश्विकमंदीपर वैश्विक कपड़ा निर्यात और आयात. गजरा -रिसर्च के लिए ग्लोबल जर्नलविश्लेषण, 4(1),103-105.
- N. Chhabra (2019) Entrepreneurship development “women entrepreneurs” page number from
- https://www.ibef.org/industry/textiles
- https://msme.gov.in/rise-handloom-global-industry